महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

०२/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... देखिए अपना मूलस्वरूप... कुछ क्षण के लिए अपने मूलस्वरूप का गहराई से अनुभव करें... सभी अपना मूलस्वरूप स्पष्टता से देखें... देखिए अपने मूलस्वरूप के लाइट को... देखते जाइए... इस हर एक पॉज को अपने मूलस्वरूप अवस्था को देखने में लगाएं.. यही आप हो.. यही आपका सत्य स्वरूप है... यह आप चैतन्य स्वरूप हो... सभी देखें अपने मूलस्वरूप से लाइट निकल रही है... उस लाइट को अनुभव कीजिए।

जितना-जितना अपने मूलस्वरूप को देखते जाएंगे, उतना-उतना आपको आपके मूलस्वरूप से जो लाइट निकल रही है, उस लाइट की फीलिंग समझती जाएगी। आप उस लाइट के अंदर क्या है, किस प्रकार की ऊर्जा है, वह आप स्पष्टता से फील कर पाओगे, जितना-जितना आप आपके सत्य स्वरूप को मूलस्वरूप को देखते जाएंगे। अभी अगले १० सेकंड के लिए आप आपके मूलस्वरूप को, उस लाइट को स्पष्टता से देखें... कुछ अनुभव किया इन १० सेकंड में? हर कोई अपने मूलस्वरूप के अभ्यास के अनुभव की फीलिंग को सदा अपने बुद्धि के अंदर नोट करते जाना। और जब-जब आप मूलस्वरूप के अभ्यास में बैठोगे तब-तब आप देखते जाना कि क्या अनुभव में, क्या मूलस्वरूप को देखने में और स्पष्टता आयी है? क्या हम मूलस्वरूप के लाइट को स्पष्टता से देख पा रहे हैं? हर बार अभ्यास करते समय और करने के बाद अवश्य अपनी चेकिंग करना कि - अभी मूलस्वरूप के अभ्यास में बैठने जा रही हूँ मैं आत्मा, तो बैठने से पहले मुझ आत्मा की स्थिति कैसी है? मेरे मन, बुद्धि, संस्कार की स्थिति कैसी है? मेरे सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों की स्थिति कैसी है? सभी पहले, अभ्यास से पहले अपने बुद्धि के अंदर इन सब बातों को नोट

करें। फिर अभ्यास में बैठ जाएं। जब-जब अभ्यास में बैठोगे तब-तब आपका ध्यान सिर्फ आपके मूलस्वरूप पर ही होना चाहिए। आप आपके मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखने का प्रयास करते रहना। आप आत्मा आपके सिंहासन पर विराजमान, अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित होकर बैठी है। अभ्यास के समय बस ध्यान रहे मूलस्वरूप को देखते रहने का, उसकी लाइट को देखते रहने का। जितना-जितना आप उसे दिल से देखने का अभ्यास करते जाओगे उतना-उतना आपको आनंद मिलेगा, सच्ची खुशी मिलेगी, मौज आएगी। और अभ्यास पूरा होने के बाद फिर से चेक करना - अभी हमारे मन, बुद्धि, संस्कारों में क्या परिवर्तन आया है? क्या कुछ बदलाव हुआ है? चेक करें - आपके सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों में क्या कुछ परिवर्तन आया है? हर बार अभ्यास करने के बाद आपको परिवर्तन अवश्य मिलेगा। सिर्फ आपको आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेंद्रियों का अभ्यास होना जरूरी है। तब आप चेक कर पाएंगे कि इनके अंदर क्या-क्या परिवर्तन आया है। जब-जब आप आत्माएं, कभी भी कोई भी पुरुषार्थ या तपस्या करने को बैठेंगे तब-तब हमेशा पुरुषार्थ, तपस्या, आत्मा का अभ्यास करने से पहले और करने के बाद अपनी स्थिति को अवश्य चेक करें - एक है मन, बुद्धि, संस्कारों की चेकिंग, एक है स्थूल कर्मेंद्रियों की चेकिंग और एक है आपके संकल्पों की, विचारों की, भाव की, वृत्ति की चेकिंग - कि अभ्यास के बाद आपके संकल्पों में कितनी शुद्धि आयी है? आपके विचारों में कितना परिवर्तन आया है? आपका हर किसी के लिए किस प्रकार का भाव उत्पन्न हो रहा है? आपका आपके लिए किस प्रकार का भाव उत्पन्न हो रहा है? आपकी वृत्ति, अभी सभी के लिए, सभी बातों के लिए कितनी परिवर्तित हुई है या कैसी बनी है? हर कोई चेक करे। अगर आप आपकी चेकिंग सटीकता से कर पाएंगे तो बहुत जल्दी ही आप अपने मूलस्वरूप अभ्यास को करते-करते आपके अंदर के विपरीत गुणों की चेकिंग करके उनको मुक्त कर पाएंगे।

पर सबसे पहले आपको पता होना चाहिए कि आपके संकल्प खुद के लिए और दूसरों के प्रति, विश्व के प्रति कैसे चलते हैं? आपके विचार स्वयं के लिए, दूसरों के लिए, विश्व के लिए कैसे चलते हैं? आपका भाव स्वयं के लिए और दूसरों के लिए और विश्व के लिए कैसे होता है? आपकी वृत्ति, स्वयं के

प्रति कैसे रहती है और दूसरों के प्रति, विश्व के प्रति कैसे रहती है? हर किसी को अपने संकल्प, विचार, भाव और वृत्ति का अभ्यास होना बहुत जरूरी है। हर कोई अपने से चेक करें कि क्या मेरा भाव निस्वार्थ है या मेरे भाव में कोई स्वार्थ है? मेरी वृत्ति सबके लिए क्या सदैव शुद्ध रहती है या जो मुझे मदद करते हैं उनके प्रति मेरी वृत्ति अच्छी है और जिनसे मदद नहीं मिलती उनके प्रति वृत्ति अच्छी नहीं है? क्या मेरे वृत्ति में विश्व के कल्याण के प्रति कोई विचार या भाव उत्पन्न होता है या मैं दिन में उठने के बाद सिर्फ स्वयं का ही विचार करता हूँ, सिर्फ स्वयं के बारे में ही सोचता हूँ? कैसी है मेरी वृत्ति? स्वार्थ भाव वाली है या निस्वार्थ भाव वाली है? अगर आपको लगता है कि आपके वृत्ति में स्वार्थ भाव ज्यादा है, अगर यह आप आत्मा को अगर रियलाइज भी हुआ, तो भी वह आपका स्वार्थ भाव निकलता जाएगा। आपके हर प्रकार के संकल्प, विचार, भाव, वृत्ति इन सब की क्लीनिंग आप ही के हाथ में है। आपको दिल से हर बात की चेकिंग करके रियलाइज करना होगा कि सच में मेरे अंदर वह दया का भाव नहीं है। मेरे अंदर सिर्फ मेरे प्रति, मेरे जितना, मेरे परिवार जितना, मेरे परिवार के कल्याण जितना ही सोचने का भाव है। मेरा भाव अब तक विश्व के प्रति, विश्व के कल्याण के प्रति नहीं पहुंचा है। जब-जब कोई यह दिल से रियलाइज करेगा अपने आप उसके अंदर सभी के प्रति, विश्व के प्रति वह निस्वार्थ भाव, निस्वार्थ वृत्ति जागृत होती जाएगी। अपने आप विश्व के कल्याण के प्रति संकल्प, विचार आते जाएंगे। पर यह कब होगा? जब आप आत्मा दिल से इसे नोटिस कर पाएगी कि – हां, मैं तो ऐसा हूँ, मेरे संकल्प, वृत्ति, बोल, विचार, भाव इस प्रकार है। ऐसे नहीं मायावश होके आप चेकिंग करो कि मैं तो अच्छा हूँ। सामने वाले ठीक से व्यवहार नहीं करते तो मैं क्यों उनके प्रति अच्छा भाव रखूं या अच्छी वृत्ति रखूं। ऐसे नहीं मायावश कभी सोचना कि समाज ने मुझे क्या दिया है, तो मैं समाज के प्रति क्यों अच्छा सोचूं। जो अच्छा ना सोचने का अस्तित्व होता है वह आपका मायावी अस्तित्व होता है। उसी के अंदर वह स्वार्थ भाव और स्वार्थ वृत्ति होती है और वह मायावी अस्तित्व इतना चतुर होता है कि वो सदा अपने आप को राइट सिद्ध करता है कि मैं तो सही हूँ, सामने वाले को पता नहीं। वो मायावी अस्तित्व अपने ऊपर कलंक या दाग लगाने नहीं देता।

आत्मा का सबसे पहला और मुख्य स्वभाव, संस्कार है - क्षमा लेना और क्षमा करना, माफ करना और माफी लेना। हर कोई अपने अंदर अवश्य चेक करें कि यह स्वभाव, संस्कार मुझ आत्मा के अंदर कितना है। क्या मैं हर बार, हर परिस्थिति में अपने आप को राइट सिद्ध करती हूँ या गलती ना होने पर भी आप क्षमा मांगते हो। हर कोई चेक करें कि आप अभी भी किसी के कोई व्यवहार, कोई परिस्थिति वश किसी के द्वारा कोई बात हो गयी, कर्म घटित हो गए, अभी भी क्या आपने उसे आपकी बुद्धि में पकड़ कर रखा है? एक्चुअली वह आप नहीं पकड़ते। आत्मा बहुत शुद्ध है। पकड़ने वाला आपका मायावी अस्तित्व होता है। तो हर कोई चेक करें। आपके अंदर गलती होने के बाद माफी मांगने का गुण, स्वभाव, संस्कार कितना है? गलती ना होकर भी माफी मांगने का गुण, स्वभाव, संस्कार कितना है? किसी से कोई बात गलत हो जाती है तो उसको दिल से माफ करने का गुण, स्वभाव, संस्कार कितना है? आप नहीं जानते परमात्मा की यह जो शिक्षा है माफी लेना, माफ करना, क्षमा करना, क्षमा लेना - इसमें आप आत्मा का कितना तेजी से परिवर्तन होता है। इस एक परमात्मा की शिक्षा से आपके कितने सारे जन्मों के कार्मिक अकाउंट चुक्त हो जाते हैं। आप आत्मा कितने लेवल पर परिवर्तित हो जाती है और आप आत्मा की स्थिति उस एक गुण से, उस एक स्वभाव, संस्कार से कितनी ऊपर उठती है। अंत में आपको पता चलेगा कि परमात्मा की हर एक शिक्षा से आप आत्मा का कितना परिवर्तन होगा, होता है या हो गया - अगर आपने वह शिक्षा आपके धारणा में लाई होगी तो। यह बहुत विशेष गुण है और इस ही गुण से आपके अंदर नम्रता की शक्ति प्रवेश होगी। नम्रता यह शक्ति भी अति शुद्ध, पवित्र शक्ति है। यह शक्ति वहां ही ठहरेगी जिस आत्मा के अंदर माफी मांगने का, माफ करने का गुण है, उसका स्वभाव, संस्कार है। ऐसे नहीं कि सिर्फ आप ऊपर-ऊपर से माफी मांगो या किसी को ऊपर-ऊपर से माफ करो, टॉपिक क्लोज करने के लिए। नहीं, यह बहुत सूक्ष्म बात होती है। आपको मन से, बुद्धि से सामने वाले से माफी मांगनी होगी, आपके गलती के लिए या आपसे किसी को किसी भी प्रकार का दुख पहुंचाने के लिए और आपको हर किसी को माफ करने का मन से और बुद्धि से, दिल से माफ करने का गुण होना चाहिए। जितनी आपकी इस गुण के

लिए सच्ची दिल होगी, यह गुण आपके व्यवहार में जितना सच्चाई से उतरेगा या आएगा उतनी ही नम्रता की शक्ति आपके अंदर आ जाएगी। तो हर कोई चेक करना। यह गुण, यह स्वभाव, संस्कार जिनके अंदर होगा उनके कार्मिक अकाउंट बहुत तेजी से सेटल होते जाते हैं, संगम युग में। इस एक गुण से आप आपके हर प्रकार के बड़े से बड़े या छोटे से छोटे, हर एक कार्मिक अकाउंट को तेजी से चुक्त कर पा सकते हो।

पर यह गुण, यह स्वभाव, संस्कार सच्चाई से, दिल से आप आत्मा के अंदर होना चाहिए। ऐसे भी स्वार्थ भाव ना रहे कि मुझे मेरा कार्मिक अकाउंट तेजी से चुक्त करने हैं इसलिए मैं सभी को माफ करती हूँ - जिन्होंने मेरे प्रति कुछ दुखदायक कर्म किए होंगे, बोल बोले होंगे या संकल्प, विचार, वृत्ति विपरीत रूप से कभी प्रकट की होगी। ऐसे नहीं। स्वार्थ भाव से कोई भी आपका रचा हुआ संकल्प, बोल या विचार कभी भी उसकी पूर्ति या सिद्धता नहीं होती। जो कर्म फिर संकल्प का कर्म हो, विचारों का कर्म हो, बोल कर्मों का कर्म हो उसमें निस्वार्थ भाव होना जरूरी है। भल उस बात से आपको कुछ प्राप्ति मिले या ना मिले पर मुझ आत्मा का यह गुण है, यह स्वभाव, संस्कार है। मैं इसे नहीं छोड़ सकती। क्षमा करना और क्षमा लेना, माफ करना, माफी मांगना - यह मेरा, मुझ आत्मा का प्रमुख गुण है, स्वभाव, संस्कार है। इसलिए स्वार्थ भाव से कभी किसी से माफी नहीं मांगना न कभी किसी से माफी करना। स्वार्थ भाव से कभी भी माफी नहीं मिल सकती या ना माफी हो सकती है। बल्कि स्वार्थ भाव से आपने कोई कर्म किया तो उसका अलग कार्मिक अकाउंट बन जाएगा। सदैव सभी अपनी संकल्प, विचार, वृत्ति, भाव, बोल कर्मों की चेकिंग जरूर करें कि - इन सब में कहां-कहां पर मेरे अंदर स्वार्थ भाव मेरे प्रति आता है, कितना परसेंट में आता है और कितना परसेंट में इन सब में मेरे अंदर निस्वार्थ भाव आया है। निस्वार्थ भाव से कर्म करना यह परमात्मा की शिक्षा है तो यह शिक्षा मुझ आत्मा के अंदर कितनी उतरी है। हर कोई सच्चे दिल से सिर्फ इन सब बातों को चेक करके रियलाइज भी करें तो भी आपके अंदर वह निस्वार्थ भाव, निस्वार्थ वृत्ति सभी के प्रति आती जाएगी। और परमात्मा की शिक्षा आपके, आप आत्मा के अंदर उतरती जाएगी।

यह गुण कोई साधारण गुण नहीं है। यह बहुत महान, श्रेष्ठ गुण है। माफ करना और दिल से माफी मांगना, माफी लेना। इस एक गुण से आपके अंदर प्योरिटी आती जाएगी। आपके अंदर समझ की शक्ति बढ़ती जाएगी। आपके अंदर शिक्षाओं को, परमात्मा की सभी शिक्षाओं को धारण करने की शक्ति आती जाएगी। आपके अंदर परमात्मा की श्रीमत पर चलने की शक्ति आती जाएगी। आपके अंदर आपके शरीर को चलाने की, शरीर को कंट्रोल करने की शक्ति आती जाएगी। आपके अंदर पांच तत्वों को, जो आपका शरीर जिन पांच तत्वों से बना है, उनके ऊपर पूर्ण रूप से कंट्रोल करने की शक्ति आती जाएगी। इस एक गुण से आपके मन, बुद्धि, संस्कारों में स्थिरता आती जाएगी। आपके सभी कर्मेंद्रियां आपके ऑर्डर में चलते जाएंगे। आपके अंदर सहज ही अंतर्मुक्ता आती जाएगी। आपके अंदर दिव्यता बढ़ती जाएगी और नम्रता की शक्ति तो इस गुण के साथ ही जुड़ी है। इतना सब इस एक गुण में स्वभाव, संस्कार को आप आत्मा के अंदर दिल से धारण करने के बाद आपके अंदर आता जाएगा और आपको पता ही नहीं चलेगा कि आपके अंदर इतना सारा परिवर्तन कहां से आ रहा है, कहां से हो रहा है। आप आपके अंदर इतना सारा बदलाव कहां से देख पा रहे हैं। सभी इस गुण को माफी मांगने के और सामने वाले को माफ करने के गुण को दिल से अपने अंदर धारण करना। इससे सिर्फ आप आत्मा का ही कल्याण नहीं होगा बल्कि इस गुण से आप विश्व के सभी के कल्याण के निमित्त बन सकते हो। आपके द्वारा बाकी सभी का कल्याण होने में मदद मिल सकती है।

आज का, सभी का यही होमवर्क है कि - हर कोई अपने अंदर अपने इस गुण को चेक करना कि मेरे अंदर माफी मांगने का और माफ करने का दिल से, यह गुण कितना है। दूसरा होमवर्क - मेरे अंदर जो संकल्प, विचार, वृत्ति, भाव चलती है वह स्वार्थ भाव वाली है - मेरे जितनी, मेरे परिवार जितनी ही सीमित है या निस्वार्थ भाव वाली है। हर कोई इसका परसेंटेज चेक करें। जितना-जितना आप दूसरों के प्रति निस्वार्थ भाव से करते जाओगे, परमात्मा की शक्तियां आपको मिलती जाएगी। आपका परिवर्तन ऐसे ही होता जाएगा।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी अपना अभ्यास सदैव करते रहना। अपनी चेकिंग अंत तक शरीर छोड़ने तक करते रहना। इसी में परिवर्तन समाया हुआ है।